P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-6, ISSUE-4, May- Supplementary Issue - 2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

आधुनिक काल में राम काव्य की प्रांसगिकता

सुनीता शर्मा
ऐसोसिऐट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
प्रेम चन्द मारकण्डा एस.डी कालेज फॉर वूमैन,
जालन्धर

सारांश

भारत धर्म प्रधान देश है। धर्म की प्रवृति यहां मुख्य प्रवृति है। यही कभी राम बनकर मर्यादा पालन करने को बाध्य करती है। उसके लिए सीमा का निर्धारण का संचार करती है। वंशी की टेर सुनाकर सारे विश्व को उसकी स्निग्धधारा प्रकट करती हैं। कभी युद्ध का रूप धारण कर सर्व शून्य की ओर संकेत कर संसार की निस्सारता प्रकट करती हैं। यह प्रवृति एक ऐसी प्रवृति है जो मानव मन को बहलाती है, झकझोरती है, स्पन्दित करती है, कुछ करे को प्ररित करती है। ऐसी स्थिति में भारत की पवित्र मातृभूमि में यदि विभिन्न धार्मिक ग्रन्थ लिखे जाए, तो धर्म सम्बन्धी रचनाएं प्रस्तुत की जाए तो भला आश्चर्य कि बात पर?

मुख्य शब्दः आधुनिक काल, धार्मिक ग्रन्थ, रचनाएं

प्रस्तावना

आधुनिक युग बड़ा ही विचित्र है। मापदण्ड अपना हैं। उसके विचार और सिद्धांत सभी अपने है। फलस्वरूप वह प्रत्येक चीज को अपने तरीके से सोचता है। प्रत्येक चीज को अपने सिद्धान्तों की कसौटी पर निरीक्षण करने की चेष्ठा करता है। विशेषत हम सब यह कह सकते है कि आज का युग अन्धविश्वास का मजाक उड़ाता है और वह ऐसी घटना को विश्वास की दृष्टि से देखने को तैयार नही, जिसे बुद्धि मानने से इन्कार करती है। तर्क जिसे सत्य मान लेने में असमर्थता प्रकट करता है। यही कारण है कि लोग ईश्वर रूप को भी सन्देह की दृष्टि से देखने लगे है। इसी ओर संकेत करते हुए डॉ श्री कृष्ण लाल कहते है– ''परन्तु आधुनिक काल में वैज्ञानिक शिक्षा का प्रसार और बुद्धि वाद के प्राधान्य से जब अन्धभक्ति के स्थान पर तर्क बुद्धि का प्रभाव पड़ा, तब शिक्षित और विचारवान पुरूषो को ईश्वर के अवतारवाद में अविश्वास होने लगा। उस बृद्धि प्रधान गुण में आर्य समाज जो जैसे अवतारवाद के पीछे लाठी लेकर पड़ गया और उसके विरूद्ध झण्डा उठाये रहा''।

अध्यायन का क्षेत्र

राम काव्य भारतीय चिन्तन का वह मेरूदण्ड है जिससे कला, साहित्य, दर्शन और मनोविज्ञान की अवधारणाओ के सूत्र जुड़ने और प्रेरणा पाते हैं। विभिन्न कालो की आध्यात्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक अवधारणाएं राम कथा के सनातन प्रतीक–पुरूषों के माध्यम से ही अपने युग के प्रश्नों प्रति प्रश्नो का समाधान खोजती रही हैं। प्राचीन तथा मध्ययुग से ही अपने युग के इन प्रश्नों का समाधान अध्यात्म तथा भक्ति की कुक्षि से जन्म लेने वाली ईश्वरीय आस्था में खोजता रहा है। तो आधुनिक वैज्ञानिक की सप्रश्न दृष्टि भी वर्तमान युग के शंकाकुल प्रश्नों के उत्तर के लिए इन्ही सनातन प्रज्ञा–पुरूषो की ओर देखती है। सारी सृष्टि में रम राम युग युग से सात्विक रसिक जनो की रस साधना का केन्द्र बने है। राम हमारे सुपरिचित है, इतने अधिक परिचित है कि प्रत्येक जन सामान्य में न तो उनके सम्बन्ध में कोई संशय है, न कौतुहल, खुले पृष्ठो के समान उनके जीवन से सम्बन्ध प्रत्येक घटना जनमानस के लिए नेत्र मूँद कर विश्वास किया जा सकने की सीमा तक प्रामाणिक है।

साहित्यावलोकन

यद्यपि राम शब्द का प्रयोग निर्गुण सन्तो–कबीर ने भी किया पर राम काव्य के सगुण भक्ति मार्गीय कवियों ने राम के चरित को लेकर उनके व्यक्तित्व को जनता तक पहुँचाया है। राम करूणा सागर है। शरणागत की रक्षा करते है। अन्याय के विरोध में खड़े होते है। क्या ऐसा नही है कि रामकाव्य के रचयिता समय की सीमाओ के भीतर राम का मर्यादावादी रूप उभारते हुए भी उनके माध्यम से अपने विद्रोही चेतना को अभिव्यक्ति दे रहे थे। कलियुग के वर्णन से तुलसी मध्यकाल के विचलित समाज का संकेत करते है। कहते है।

''जासु राजु त्रिय प्रज्ञा दुखारी

सो नृप अवस नरक अधिकारी''।

इस प्रकार के राम काव्य में राम व्यक्ति चरित्र न होकर, सामाजिक मर्यादाओं और मानव मूल्यों के सर्वोत्म प्रतीक है। राम काव्य अपनी मर्यादाओं की रक्षा करता रहा, शालीनता के साथ और अपनी आदर्शवादी सीमाओं में उसने सामाजिक चेतना को अभिव्यक्ति दी।

राम काव्य का जितना व्यापक प्रणयन आधुनिक युग में हुआ है। वह अपने वैशिण्ट्य और पुष्पलता की दृष्टि से मध्ययुगीन रामकाव्य की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है। यदि हम श्लाघा पुरूष तुलसीदास के रामचरितमानस को छोड़ दिया जाए तो अन्य रामकाव्य युगान्त कारी संदेना अथवा अभिनव प्रतिमानों की दृष्टि से कोई विशिष्ट आयाम प्रस्तुत नही करते।

तुलसीदास का रामचरितमानस एक ऐसा वट वक्ष है जिसके नीचे इत्तर पादप वृक्षों के विकास की संभावनाएं अधिक नही थी। तुलसीदास में शिल्प और संदेना की सभी संभावनाओं को रामचरितमानस में जैसे चरम सीमा पर पहुचा दिया है, उसके आगे प्रतिभा के लिए नये क्षितिजो का उद्घाटन कम से कम लोक मंगल के उस व्यापक क्षेत्र में सम्भव नही था। श्रृंगार साधना से प्रेरणा पाने वाले कतिपय रसिकोपासना सम्बन्धी ग्रन्थों के लिए समय तो रहा, पर ये रचनाए रामकाव्य की मूल्य चेतना को वहन करने में असमर्थ है। इनमें जीवन की सर्वांगीण विराट्ता का न वैसा वैधिध्यपूर्ण चित्रण है और न भाव व्यंजना के पर ही किसी मोलिकता का उन्मेष है।

तुलसीदास ने मध्ययुगीन प्रत्याशाओ की जितनी सटीक मौलिक अभिव्यक्ति की है वह मध्ययुगीन बोध का शाश्वत प्रमाणिक स्वर बनी हैं, पर तुलसी का काव्य उन मान को तथा प्रतिमानो की आधार भूमि पर खड़ा हैं। जिससे पात्र व्यक्ति नही, वर्ग विशेष के प्रतिनिधि बनकर आते हैं। नारी जिसमें किसी स्वतन्त्र अस्तित्व की अधिकारणी तथा परिस्थिति की नियामिका न रह कर पौरूष प्रदर्शन का अनिवार्य निकष बन कर आती है। वह या तो भोग्या हैं या फिर रक्षणीया तुलसीदास का समय अपनी सम्पूर्ण सबल्लाओ और दुर्बलतोओ में एक आस्थावादी युग है। ये आस्थाएं एक सीमा तक पूर्वाग्रह, मताग्रहो या अन्धविश्वास तक का रूप धारण कर लेती हैं।

आधुनिक रामकाव्य के पूर्व रामकथा सम्बन्धी प्रबन्ध काव्यों की एक लम्बी कड़िया मिलती है। इन्हे वाल्मीकि द्वारा निर्दिष्ट कथा सपानों में समाविष्ट किया जा सकता है। राम काव्य परम्परा में तीन रचना दृष्टियाँ देखी जा सकती है–

1. लौकिक
2. आध्यात्मिक
3. अद्‌भुत

'अध्यातम रामायण' में राम और उनके परिवार के यात्रा में मानवेतर गुणों का समावेश हो जाने से कथा के सहज–ऋतु प्रवाह में रूकावट आती है। तुलसी का मानस कथा की स्थूल रूप रेखा के लिए जहाँ वाल्मीकि का उपजीवी है। वहां अपने विचार दर्शन के आधार पर उस कथा को नवीन रूप में संजोने के लिए अध्यात्म रामायण का आधार लिया है। अदभुत रामायण प्रसन्न राघव, आश्चर्य चूडामणि, हुनमान नाटक आदि में अनेक अलौकिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है जो बौद्धिक व्याख्या की अपेक्षा रखती है। बौद्ध और जैन राम काव्य परम्परा ने राम कथा के मूल स्वरूप को अनेक स्थलो पर पूर्णतः परिवर्तित कर दिया है।

आधुनिक युग में 'अग्नि परीक्षा' जैसे एकाध काव्य को छोड़ कर उस परिर्वतन का प्रायः उपयोग नही किया गया है। ''अग्नि परीक्षा'' में सीता निर्वासन के उपरान्त वाल्मीकि के आश्रम के स्थान पर पुण्डरीकपुर के राजा वज्रजंध के यहां बहन के रूप में आश्रय ग्रहण करती है।

रामकथा का विशाल वाड्मय भारत में ही नही लंका, सुमात्रा, हिन्द ऐशिया जावा आदि द्वीप समूहों के रामकाव्य में व्याप्त है। संयोग, सहयोजन, संक्षेपण, बलाघात उपबृंहण इत्यादि एक ही घटना अनेक रूपों में व्यक्त होती है। कथा अनिवार्यताओ, लोक विश्वासो संभावनाओ स्थानीय परम्पराओ तथा युगीन और अवधारणाो के कारण राम कथा की असंख्य घटनाएं संक्ष्यातीत रूप में प्राप्त होती है।

आधुनिक राम काव्य ये एक युगदर्शन और विशिष्ट युग की अभिव्यक्ति है। इसलिए उन सभी भिन्नताओं का वर्णन करना उसी समय तक प्रासगिक और आवश्यक है जहां पर उस जीव दर्शन के गुणात्मक परिवर्तन को संदर्भित करती है। आधुनिक राम काव्य में कथा परिवर्तन एवं उद्भावनाएं प्रायः चारित्रिक और जीवन दर्शन की आधार भूमि पर हुई है। इसमे उपेक्षित पात्रो के अस्तित्व की पुनः प्रतिष्ठा लांछित पात्रो के प्रति सुहानुभूति और उनकी कलंक मुक्ति के प्रयास प्रतिपाद्य एवं प्रतिनायक के चारित्रिक गुणो का उल्लेख, तर्कशील आर्दा पात्रो के नैतिक अन्तर्द्वन्द एवं क्षणिक दुर्बलता के लिए आधुनिक कवियो न रामकाव्य के परम्परित इतिवृत का पुनः संस्कार किया है।

आधुनिक युग में दूसरी तरफ जिन अवधारणाओ ने प्रेरित किया है। उसने प्रभावित हुए कवि कथा में परिवर्तन एवं परिवर्द्धन की तरफ उन्मुख हुए हैं। मार्क्सवाद मनोविश्लेषण, विकासवाद (डार्विन) आस्तिववाद आदि अवधारणाओं को प्रभाव आधुनिक युग चिन्तन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। जिसके कारण कवियों ने रामकाव्य को कृषि–संस्कृति, अवचेतन की दमित कुण्ठा, अर्थ विषमता, अस्मिता का संकट आदि के विश्लेषण के लिए उपकरण रूप में विवेचित किया है।

प्राचीन एवं नवीन जीवन मूल्यों के इस अन्तः संघर्ष के चित्रांकन के लिए नवीन कवियों को परम्परित कथा में बहुत ही परिवर्तन करना पड़ा है। जो आस्तिक आदर्शवादी बुद्धि को ग्राहय नही हो सका। माइकेल मधुसूदन दत्त के बगंला के 'मेघनाद' वध पर आक्षेप इसी नैतिक बुद्धि के कारण हुए है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ऐसे परिवर्तन को अधिक काव्योपयोगी नही माना है।

आधुनिक राम काव्य के कवियों के अपनी वैचारिक अवधारणाओ के अनुरूप कथा के सयोजन और परिवर्तन के औचित्य को परिलक्षित करना अनिवार्य हो गया। उन्हें अपनी रचनाओं को लोक मानस में ग्राहय

बनाने के लिए सामाजिक एवं धार्मिक सामजस्य स्थापित करना आवश्यक था। इस प्रकार उन्होंने अपनी कथा को मर्यादा विहीन और प्रतिष्ठित आदर्श विरोधी अंश के ख्यातवत को प्रमाणित करने के लिए अपने नाटको, काव्या और उपन्यासो की भूमिका या पीठिका में प्राचीन रामकाव्य के अनेक संन्दर्भ प्रस्तुत किए है। प्रीतम सिंह बगरेचा के ''शूर्पणखा'' और हरदयाल सिंह के 'रावण महाकाव्य' आदि काव्यों में प्रति पात्रो की प्रतिष्ठा के लिए प्राचीन वाड.मय का प्रमाण प्रतिविम्वित किया गया है। केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' और चान्दमल अग्रवाल के रचित ''कैकयी'' और राधेश्याम के रचित ''कल्याणी कैकयी'' आदि की भूमिका कैकेयी के आचरण के औचित्य को प्रमाणित करने के उद्देश्य से लिखी गई है। सीता वनवास जैसा वृतांत नारी मुक्ति के वर्तमान युग में रामकथा के आदर्शवाद के अनुकूल नही है। ''राम का अन्तर्दृन्द्व'' नामक कविता भी इसी दृष्टिकोण को परिलक्षित करती है। जिसमें कवि ने अपनी कथा के प्रमाण स्वरूप वाल्मीकीय रामायण से सम्बद्ध सन्दर्भों की दीर्घ तालिका प्रस्तुत की है। यही दृष्टि कोण उपेक्षित एवं लांछित पात्रों के अस्तित्व की प्रतिष्ठा स्थापित करने केलए लिखे जाने वाले काव्यों में परिलक्षित होती है।

'' उत्तरायण'' की भूमिका में डॉ. रामकुमार वर्मा ने प्राचीन वाडमय् के अनुशीलन के द्वारा यह तथ्य स्वीकार किय है। विश्वामित्र, अहल्या जैसे पात्रो को राम कथा की केन्द्रीय धारा में विशिष्ट स्थान नही रखते पर आधुनिक युग की वैचारिक अवधारणाओ के अनुरूप उनके चरित्र को काव्य के केन्द्रीय वृत में रखकर विकसित किया है और वर्णित घटनाओ की पुष्टि के लिए भूमिका स्वरूप प्रमाण प्रस्तुत किये गए है।

डॉ विनय रचित ''एक विश्वास और'' शरण बिहारी गोस्वामी रचित पाषाणी तथा रमेशचन्द्र मिश्र रचित ''एक पुरूष और'' आदि काव्यो की भूमिकाए इसी दृष्टि से अवलोकित है। अन्य कई कवियों ने रामकथा के अन्य प्रसंगो पर काव्य रचे है। उन्होने भी काव्य के इतिवृत के प्रामाण्य को वर्णित करने के लिए प्राचीन वाडमय का आश्रय लिया है। अभिप्राय स्वरूप कि आधुनिक कवि और समीक्षक भी नवीन उद्भावनाओं को तभी अपनाते है जबकि परम्परा से उनका अविच्छिन्न सम्बन्ध उदघाटित होता है। ख्यात वृत के साथ अपनी उद्भावनाओ को मिलाने की अभिलाषा कवि और पाठकों में साधारणीकृत हुए बिना समापत नही किया जा सकता। लोक मानस में कोई भी रचना प्रिय तभी होती है जब उसमें निहित प्रतीक और बिम्ब प्राचीन संस्कारो की पृष्ठभूमि में परिलक्षित किए जाए।

आधुनिक राम काव्य के इतिवृत का अनुशीलन करने के बाद उपयुक्त तथ्यो पर दृष्टिपात करना आवश्यक था कि अधिकांश कवियों ने वाल्मीकीय रामायण को ही प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया है। इतर वाड्मय का उपयोग उन्होंने अपनी स्फुट अवधारणाओ की पुष्टि के लिए ही किया है। यहां तक 'राम चरित मानस' मूलतः वर्णित घटनाओ को ही वास्तविक और एतिहासिक तथ्य माना जाता है। ''मानस'' मूलतः ''आध्यात्म रामायण'' से प्रभावित है तथा कथा के संयोजन के लिए '' वाल्मीकीय रामायण'' के अतिरिक्त हनुमान नाटक'' ''अनर्घ राघव'', ''प्रसन्न राघव'' आदि से सूत्र लिए है पर यहां आरम्भ में परम्परित कथा की रूपरेखा स्फुट करने के लिए ''वाल्मीकीय रामायण'', ''अध्यात्म रामायण'' और ''रामचरित मानस के कथा सूत्रों का वर्णन किया गया है। कुछ स्थानो पर प्रमुख घटनाओ में नवीनता एवं भिन्नता का संकेत देने के लिए अन्य ग्रन्थें का भी तुलनात्मक वर्णन किया गया है। कथा की मूल रूपरेखा कुछ भिन्नताओं को छोड़ते हुए अद्यावधि इसी रूप में चलती आ रही है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत जम यही कह सकते है कि लगभग सभी पुराणो में रामकथा के सम्बन्धित कुछ न कुछ तथ्य अवश्य प्राप्त होते हैं चाहे यह तथ्य हमे अलग–अलग रूपों में प्राप्त होते हैं पर उसमें निहित जो भावना है यह समान ही हैं। राम का जीवन समस्त मानव जाति के लिए आदर्श स्वरूप है। राम का पितृ भक्त होना, पिता जी की आज्ञा को शिरोधार्य करना माता के प्रति विनमता भ्रातृप्रेम, राज्य का तृण के समान तिरस्कार, प्रजा पालनकर्ता एवं पत्नी के प्रति एक निष्ठता निष्टता आदि ऐसे गुण है जो आज के परिवेश में प्राय लुप्त होते जा रहे हैं। इसलिए वर्तमान समय में राम कथा की उपादेयता और भी अधिक बढ जाती है। क्योंकि यह भारतीय संस्कृति का मेरूदण्ड है। हमारे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में राम लोक जीवन के उन्नायक के रूप में प्रतिष्ठित है। राम विष्णु के अवतार स्वरूप हैं। उनका अवतार ही लोक कल्याण के लिए हुआ है। समस्त सृष्टि में उनकी सत्ता का पभाव लालित्य भावना की अनुभूति कराता है। राम का जीवन दर्शन समन्वयात्मक रूप में लोक संरचना को समृद्धि प्रदान करता है। उनका लोक नियामक अनुशासन आज आधुनिक युग में राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति पर विशेष रूप से प्रभावित करता है।

इस प्रकार से रामकाव्य की धारा उत्तर और दक्षिण दोनो ओर प्रवाहित हुई। पर उनके आराध्य देव ऐ जैसे जान पड़ते। उत्तर में उपासना के सिलसिले में लीला की प्रधानता और दक्षिण में साधना की प्रधानता रहने के कारण भक्तों का झुकाव ब्रहम स्वरूप राम की ओर रहा। आज उनका स्वरूप सब ओर एक ही तरह का है।

साहित्यिक सौन्दर्य की दृष्टि से तो उसका समरूप खड़ी बोली में ही उपलब्ध है। इस प्रकार से यही स्पष्ट होतो है कि भक्तिकाल में रामकाव्य जो निर्माण हुआ वह आज आधुनिक युग में भी समाप्त नही हो सका है।

सन्दर्भ गन्थ सूची

1. *डा. श्री कृष्ण लाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, पृ. 46*
2. *बलदेव प्रसाद मिश्र, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, द्वितीय संस्करण, सन 1972*
3. *राधेश्याम, कथावाचक, श्री राम कथा (रचना काल–1922) श्री राधेश्याम पुस्तकालय, बरेली, संस्करण, सन 1964*

4. *पं. हरशंकर शर्मा, रामराज्य, राजपाल प्रकाशन, आगरा, संस्करण 1953*
5. *सुरेश चन्द्र शर्मा, रामराज्य, नवज्योति प्रकाशन, आगरा संस्करण, 1968*
6. *पुरुषोत्तम रामः सुमित्रानन्दन पंति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन, 1967*
7. *नित्यानन्द शास्त्री, रामकथा, कल्पलता, 1948*
8. *आं. तुलसीदास, अग्नि परीक्षा (अनुवाद) पृ. 81*
9. *डां रामलेखन पाण्डेय, तुलसीदाससोत्तर राम साहित्यः अभिनव भारती, इलाहाबाद, पृ. 71*
10. *आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ. 152—154*
11. *डा. सावित्री सिन्हा, पाशचात्य काव्य शास्त्र की परम्परा दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ. 220*
12. *12 चिन्तामणि भाग (1) काव्य के लोकमंगल की साधनावस्था, प्रयागः इण्डिन प्रैस.लि. संस्कण सन् 1951 पृ. 220*

पत्रिकाएं

1. सरस्वती, सरिता जुलाई अंक 1977